

भारतीय धार्मिक एवं सामाजिक जागरण में ब्रह्म समाज का योगदान

प्राप्ति: 28.08.2026
स्वीकृत: 15.09.2026

69

डॉ० शालिनी
असिस्टेंट प्रोफेसर
(इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व विभाग)
चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जींद हरियाणा
ईमेल: shaliniicdsvv@gmail.com

सारांश

उन्नीसवीं शताब्दी का भारतीय समाज अनेक धार्मिक रूढ़ियों, सामाजिक कुरीतियों और बौद्धिक जड़ताओं से प्रभावित था। इस काल में ब्रह्म समाज ने धार्मिक एवं सामाजिक जागरण की दिशा में महत्वपूर्ण और प्रभावशाली भूमिका निभाई। राजा राममोहन राय द्वारा 1828 ई० में स्थापित ब्रह्म सभा, जो आगे चलकर ब्रह्म समाज के नाम से प्रसिद्ध हुई, ने धार्मिक क्षेत्र में एकेश्वरवाद, तर्क, विवेक और नैतिकता को महत्त्व दिया तथा मूर्तिपूजा, धार्मिक रूढ़िवादिता और सामाजिक असमानताओं की आलोचना की। सामाजिक क्षेत्र में इस आंदोलन ने सती प्रथा, जातिगत भेदभाव, बाल विवाह, बहुविवाह तथा स्त्रियों की दयनीय स्थिति जैसे प्रश्नों को सार्वजनिक विमर्श का विषय बनाया। स्त्री शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह और स्त्रियों के संपत्ति एवं उत्तराधिकार संबंधी अधिकारों के समर्थन ने सामाजिक सुधार की प्रक्रिया को गति प्रदान की। प्रस्तुत शोध पत्र में ब्रह्म समाज के धार्मिक और सामाजिक योगदानों का विश्लेषण किया गया है तथा यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार ब्रह्म समाज उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय नवजागरण का एक प्रमुख संगठित सुधार आंदोलन बनकर उभरा और आधुनिक भारत की वैचारिक एवं सामाजिक चेतना के विकास में योगदान दिया।

मुख्य शब्द

ब्रह्म समाज, राजा राममोहन राय, धार्मिक जागरण, सामाजिक सुधार, भारतीय नवजागरण, एकेश्वरवाद, तर्कवाद, स्त्री सुधार, सती प्रथा, सामाजिक समानता

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास में उन्नीसवीं शताब्दी परिवर्तन, सुधार और नवजागरण की दृष्टि से अत्यंत

**This article has been peer-reviewed by the Review Committee of Shodhmanthan.*

महत्त्वपूर्ण रही है। इस काल में भारत एक ओर औपनिवेशिक शासन के अधीन था, वहीं दूसरी ओर भारतीय समाज आंतरिक सामाजिक रूढ़ियों, असमानताओं और धार्मिक जड़ताओं से भी जूझ रहा था। धर्म के नाम पर प्रचलित अनेक कर्मकांडों, रूढ़ियों और अंधविश्वासों की आलोचना आधुनिक शिक्षा और तर्कशील चिंतन के प्रभाव में होने लगी थी। इसी परिवर्तित परिस्थिति में ब्रह्म समाज का उदय हुआ।

राजा राममोहन राय ने धार्मिक सुधार को सामाजिक सुधार से जोड़ते हुए भारतीय समाज में एक नई वैचारिक चेतना उत्पन्न करने का प्रयास किया। उन्होंने उपनिषदों और भारतीय धार्मिक परंपरा के एकेश्वरवादी तथा नैतिक तत्वों को महत्त्व दिया और साथ ही तर्क तथा विवेक को धार्मिक विचार का आधार बनाने पर बल दिया। ब्रह्म समाज ने आगे चलकर धार्मिक सुधार के साथ-साथ स्त्री सुधार, जतिगत असमानता के विरोध तथा सामाजिक नैतिकता जैसे प्रश्नों को भी अपने चिंतन का हिस्सा बनाया।

उन्नीसवीं शताब्दी का धार्मिक एवं सामाजिक परिदृश्य

उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभिक दौर में भारतीय समाज के अनेक हिस्सों में धार्मिक रूढ़ियाँ, कर्मकांड और सामाजिक असमानताएँ प्रभावशाली थीं। यद्यपि भारतीय धार्मिक परंपरा स्वयं अत्यंत विविध और व्यपक थी, फिर भी उस समय के अनेक सुधारकों ने समाज में प्रचलित कुछ रूढ़िगत धार्मिक प्रथाओं और अंधविश्वासों की आलोचना की। धार्मिक आडंबर और कर्मकांड के कारण धर्म के नैतिक एवं मानवीय पक्ष पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिए जाने की शिकायत सुधारकों द्वारा की गई। सामाजिक क्षेत्र में स्त्रियों की स्थिति विशेष रूप से चिंताजनक थी। सती प्रथा, बाल विवाह, बहुविवाह, स्त्री शिक्षा का अभाव तथा विधवाओं की कठिन सामाजिक स्थिति जैसी समस्याएँ सामाजिक विमर्श का विषय बनने लगी थीं। इसी प्रकार जाति व्यवस्था और जन्म आधारित सामाजिक विभाजन ने सामाजिक समानता की भावना को कमजोर किया था। इन परिस्थितियों में आधुनिक शिक्षा, मुद्रण संस्कृति, नए बौद्धिक विचारों तथा भारतीय परंपरा के पुनर्व्याख्यात्मक अध्ययन ने सुधारवादी चिंतन को प्रोत्साहित किया। ब्रह्म समाज इसी व्यापक परिवर्तनशील वातावरण में एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक-सामाजिक सुधार आंदोलन के रूप में सामने आया।

ब्रह्म समाज की स्थापना एवं उद्देश्य

राजा राममोहन राय ने 1815 ई. में आत्मीय सभा की स्थापना की थी। इसके बाद 1828 ई. में उन्होंने ब्रह्म सभा की स्थापना की, जो आगे चलकर ब्रह्म समाज के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसका मूल उद्देश्य धार्मिक चिंतन में एकेश्वरवाद, तर्क और नैतिकता को स्थापित करना तथा सामाजिक कुरीतियों के विरोध के माध्यम से समाज सुधार की दिशा में कार्य करना था।

ब्रह्म समाज के प्रमुख उद्देश्य थे—

- एक निराकार, एकेश्वरवादी ईश्वर की उपासना।
- धर्म में तर्क और विवेक का समावेश।
- सामाजिक कुरीतियों एवं असमानताओं का विरोध।
- विभिन्न धर्मों के नैतिक एवं मानवीय मूल्यों के प्रति सम्मान।
- धार्मिक आडंबर और रूढ़िवादिता की आलोचना।

राजा राममोहन राय का विश्वास था कि धर्म मानव कल्याण और नैतिक जीवन का साधन होना चाहिए, न कि अंधविश्वास अथवा सामाजिक शोषण का माध्यम।

धार्मिक जागरण में ब्रह्म समाज का योगदान

1. एकेश्वरवाद का प्रचार:

ब्रह्म समाज ने एकेश्वरवाद को धार्मिक चिंतन का प्रमुख आधार बनाया। राजा राममोहन राय ने उपनिषदों सहित भारतीय धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करते हुए उनमें निहित एकेश्वरवादी एवं आध्यात्मिक विचारों को सामने रखा। उन्होंने मूर्तिपूजा और धार्मिक कर्मकांड की आलोचना की तथा ईश्वर की निराकार उपासना पर बल दिया।

इस प्रकार ब्रह्म समाज ने धार्मिक विश्वास को बाहरी कर्मकांड के स्थान पर आंतरिक नैतिकता, आध्यात्मिकता और विवेक से जोड़ने का प्रयास किया। इससे शिक्षित भारतीय समाज में धार्मिक विचारों की आलोचनात्मक समझ विकसित करने में सहायता मिली।

2. तर्कवाद और विवेक:

ब्रह्म समाज का एक महत्वपूर्ण योगदान धर्म के क्षेत्र में तर्क और विवेक को महत्व देना था। राजा राममोहन राय धार्मिक मान्यताओं को केवल परंपरा के आधार पर स्वीकार करने के बजाय उनके तार्किक एवं नैतिक आधार की जाँच के पक्षधर थे।

उन्होंने धार्मिक ग्रंथों की आलोचनात्मक व्याख्या को प्रोत्साहित किया। इससे धार्मिक सुधार और आधुनिक बौद्धिक चेतना के बीच संबंध स्थापित हुआ।

3. सभी धर्मों की एकता:

राजा राममोहन राय ने विभिन्न धार्मिक परंपराओं का अध्ययन किया और उनके नैतिक एवं मानवीय तत्वों को महत्व दिया। वे इस्लाम और ईसाई धर्म सहित विभिन्न धार्मिक परंपराओं के नैतिक विचारों से परिचित थे और सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों पर बल देते थे।

ब्रह्म समाज ने विभिन्न धर्मों के बीच संवाद, नैतिक समानता और मानवतावादी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया। इससे धार्मिक सहिष्णुता और व्यापक मानवीय दृष्टि के विकास में योगदान मिला।

जाति व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष

जातिगत विभाजन भारतीय समाज में सामाजिक असमानता का एक महत्वपूर्ण कारण था। ब्रह्म समाज ने जन्म आधारित सामाजिक श्रेष्ठता तथा जातिगत भेदभाव की आलोचना की और मानव की समानता पर बल दिया।

ब्रह्म समाज की विचारधारा में—

- जन्म आधारित जातिगत श्रेष्ठता का विरोध किया गया।
- सामाजिक समानता की भावना को प्रोत्साहित किया गया।
- अंतरजातीय सामाजिक संबंधों और विवाह को समर्थन देने वाली सुधारवादी प्रवृत्तियों को बल मिला।
- व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा को जन्म के बजाय उसके नैतिक एवं मानवीय गुणों से जोड़ने का प्रयास किया गया।

इस प्रकार ब्रह्म समाज ने जातिगत रूढ़ियों को चुनौती देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालांकि जाति व्यवस्था का पूर्ण उन्मूलन तत्काल संभव नहीं हुआ, फिर भी इसके विरुद्ध वैचारिक वातावरण बनाने में ब्रह्म समाज का योगदान उल्लेखनीय था।

सती प्रथा के उन्मूलन में ब्रह्म समाज की भूमिका

सती प्रथा उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय समाज की गंभीर सामाजिक समस्याओं में से एक थी। राजा राममोहन राय ने इस प्रथा का धार्मिक, नैतिक और मानवीय आधार पर विरोध किया। उन्होंने भारतीय धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन कर यह तर्क प्रस्तुत किया कि सती प्रथा को हिंदू धर्म की अनिवार्य धार्मिक व्यवस्था के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

उन्होंने लेखन, सार्वजनिक बहस और जनमत निर्माण के माध्यम से सती प्रथा के विरुद्ध वातावरण तैयार किया तथा सरकार के समक्ष भी इस प्रथा को समाप्त करने की आवश्यकता प्रस्तुत की।

1829 ई. में तत्कालीन गवर्नर-जनरल लॉर्ड विलियम बैंटिक के शासनकाल में बंगाल प्रेसीडेंसी में सती प्रथा को कानून द्वारा अवैध घोषित किया गया। सती प्रथा के उन्मूलन में सरकारी कानून के साथ-साथ भारतीय सुधारकों और व्यापक सामाजिक विमर्श की भूमिका रही, जिसमें राजा राममोहन राय का योगदान विशेष रूप से महत्वपूर्ण था।

स्त्री सुधार में योगदान

ब्रह्म समाज ने स्त्रियों की सामाजिक स्थिति में सुधार को सामाजिक जागरण का महत्वपूर्ण अंग माना। स्त्री शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, विवाह संबंधी सुधार तथा स्त्रियों के संपत्ति अधिकार जैसे विषयों पर सुधारवादी विचारों को प्रोत्साहन मिला।

1. स्त्री शिक्षा:

ब्रह्म समाज ने स्त्री शिक्षा के महत्त्व पर बल दिया। उसका मानना था कि समाज की प्रगति के लिए महिलाओं का शिक्षित होना आवश्यक है। स्त्री शिक्षा को केवल व्यक्तिगत विकास का माध्यम नहीं, बल्कि परिवार और समाज में नैतिक तथा बौद्धिक जागरूकता बढ़ाने का साधन भी माना गया।

2. विधवा विवाह:

विधवा पुनर्विवाह को सामाजिक मान्यता दिलाने के प्रयास उन्नीसवीं शताब्दी के व्यापक सामाजिक सुधार आंदोलन का हिस्सा थे। इस क्षेत्र में ईश्वरचंद्र विद्यासागर का योगदान विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहा और 1856 के हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम ने इसे कानूनी आधार प्रदान किया।

ब्रह्म समाज ने भी विधवा पुनर्विवाह और स्त्रियों की स्वतंत्र सामाजिक स्थिति के समर्थन में सुधारवादी वातावरण तैयार करने में योगदान दिया। अतः विधवा पुनर्विवाह का श्रेय केवल ब्रह्म समाज को देना उचित नहीं होगा, बल्कि इसे व्यापक सामाजिक सुधार आंदोलन के संदर्भ में देखना अधिक उपयुक्त है।

3. संपत्ति अधिकार:

राजा राममोहन राय ने स्त्रियों के संपत्ति एवं उत्तराधिकार संबंधी अधिकारों का समर्थन किया। उन्होंने विशेष रूप से हिंदू समाज में महिलाओं की संपत्ति संबंधी स्थिति और उनके अधिकारों के प्रश्न को उठाया। इस प्रकार उन्होंने स्त्री को केवल पारिवारिक भूमिका तक सीमित रखने के बजाय उसके सामाजिक एवं आर्थिक अधिकारों की आवश्यकता पर बल दिया।

बाल विवाह और बहुविवाह का विरोध

ब्रह्म समाज ने बाल विवाह तथा बहुविवाह जैसी सामाजिक समस्याओं की आलोचना की और विवाह संस्था में नैतिकता, सहमति तथा सामाजिक उत्तरदायित्व को महत्त्व दिया। विशेष रूप से केशवचंद्र सेन के नेतृत्व में ब्रह्म समाज के सामाजिक सुधार कार्यक्रमों को अधिक व्यापक रूप मिला।

1872 का अधिनियम, जिसे सामान्यतः ब्रह्मो विवाह अधिनियम के नाम से जाना जाता है, सुधारवादी विवाहों को कानूनी आधार प्रदान करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम था। इसमें विवाह की आयु, एक-विवाह तथा कुछ अन्य सुधारवादी शर्तों से संबंधित प्रावधान थे। इस कानून ने विवाह संस्था में सुधारवादी विचारों को वैधानिक रूप देने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया।

केशवचंद्र सेन और ब्रह्म समाज का विस्तार

राजा राममोहन राय के निधन के बाद ब्रह्म समाज के विकास में देवेंद्रनाथ ठाकुर की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने 1839 ई. में तत्त्वबोधिनी सभा की स्थापना की और आगे चलकर ब्रह्म समाज के संगठन एवं विचारधारा को मजबूत किया।

केशवचंद्र सेन 1858 ई. में ब्रह्म समाज से जुड़े और उनके नेतृत्व में आंदोलन को व्यापक सामाजिक एवं सार्वजनिक स्वरूप मिला। उन्होंने समाज सुधार, स्त्री शिक्षा, विवाह सुधार तथा नैतिक शिक्षा जैसे विषयों पर अधिक सक्रियता दिखाई।

समय के साथ ब्रह्म समाज में विचारों और नेतृत्व को लेकर मतभेद उत्पन्न हुए। 1866 ई. में देवेंद्रनाथ ठाकुर और केशवचंद्र सेन के समूहों में विभाजन हुआ। देवेंद्रनाथ के नेतृत्व वाला संगठन आगे चलकर आदि ब्रह्म समाज कहलाया, जबकि केशवचंद्र सेन के नेतृत्व में ब्रह्म समाज ऑफ इंडिया विकसित हुआ। बाद में 1878 ई. में साधारण ब्रह्म समाज का गठन हुआ।

इस प्रकार आंतरिक मतभेदों के बावजूद ब्रह्म समाज के विचारों का बंगाल से बाहर भी प्रसार हुआ और उसके सामाजिक-धार्मिक सुधार संबंधी विचारों ने व्यापक प्रभाव डाला।

भारतीय पुनर्जागरण में ब्रह्म समाज का स्थान

ब्रह्म समाज को उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय नवजागरण के प्रमुख संगठित आंदोलनों में स्थान दिया जाता है। इसने धार्मिक सुधार, सामाजिक समानता, स्त्री सुधार और तर्कशील चिंतन को एक साथ जोड़ने का प्रयास किया। ब्रह्म समाज ने—

- आधुनिक एवं तर्कशील विचारधारा के विकास में योगदान दिया।
- मानवतावादी और सामाजिक समानता के मूल्यों को प्रोत्साहित किया।
- धार्मिक सहिष्णुता और अंतरधार्मिक संवाद को बढ़ावा दिया।
- स्त्री शिक्षा और सामाजिक सुधार के प्रश्नों को सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा बनाया।
- जातिगत असमानता और सामाजिक रूढ़ियों की आलोचना की।
- आधुनिक शिक्षा एवं बौद्धिक चेतना के विकास में योगदान दिया।
- आगे विकसित होने वाली सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना के लिए वैचारिक वातावरण तैयार करने में सहायता की।

हालाँकि भारतीय पुनर्जागरण को केवल ब्रह्म समाज के प्रयासों का परिणाम मानना उचित नहीं है। यह एक व्यापक ऐतिहासिक प्रक्रिया थी, जिसमें शिक्षा, मुद्रण, विभिन्न सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों, भारतीय चिंतकों तथा औपनिवेशिक परिस्थितियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस व्यापक प्रक्रिया में ब्रह्म समाज का स्थान एक अग्रणी और प्रभावशाली सुधार आंदोलन के रूप में रहा।

निष्कर्ष

ब्रह्म समाज ने उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय समाज में धार्मिक एवं सामाजिक जागरण की प्रक्रिया को नई दिशा प्रदान की। राजा राममोहन राय ने एकेश्वरवाद, तर्क, विवेक और नैतिकता पर आधारित धार्मिक चिंतन को प्रोत्साहित किया तथा सामाजिक कुशितियों के विरुद्ध सार्वजनिक चेतना उत्पन्न की। सती प्रथा के विरोध, स्त्री अधिकारों के समर्थन, जातिगत असमानता की आलोचना तथा सामाजिक सुधार की अन्य पहलों ने भारतीय समाज में परिवर्तन की आवश्यकता को अधिक स्पष्ट किया।

देवेंद्रनाथ ठाकुर और केशवचंद्र सेन जैसे नेताओं ने ब्रह्म समाज के विचारों को आगे बढ़ाया और आंदोलन को व्यापक सामाजिक स्वरूप प्रदान किया। यद्यपि ब्रह्म समाज का प्रभाव मुख्यतः शिक्षित और शहरी समाज के कुछ वर्गों में अधिक दिखाई दिया तथा आंतरिक विभाजनों के कारण इसकी सीमाएँ भी रहीं, फिर भी इसके वैचारिक योगदान को कम नहीं आँका जा सकता।

अतः यह कहा जा सकता है कि ब्रह्म समाज भारतीय धार्मिक एवं सामाजिक जागरण का एक महत्वपूर्ण अग्रदूत था। इसने भारतीय समाज में रूढ़ियों के स्थान पर तर्क, धार्मिक संकीर्णता के स्थान पर सहिष्णुता और सामाजिक असमानता के स्थान पर समानता की भावना को प्रोत्साहित किया। इसी कारण आधुनिक भारत के सामाजिक-धार्मिक परिवर्तन और भारतीय नवजागरण के इतिहास में ब्रह्म समाज का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संदर्भ

1. Bandyopadhyay, S. (2004). *From Plassey to Partition and After: A History of Modern India*. Orient Longman.
2. Chandra, B. (2009). *History of Modern India*. Orient BlackSwan.
3. Heimsath, C. H. (1964). *Indian Nationalism and Hindu Social Reform*. Princeton University Press.
4. Kopf, D. (1969). *British Orientalism and the Bengal Renaissance: The Dynamics of Indian Modernization, 1773–1835*. University of California Press.
5. Kopf, D. (1979). *The Brahmo Samaj and the Shaping of the Modern Indian Mind*. Princeton University Press.
6. Majumdar, R. C. *History of the Freedom Movement in India*. Firma K. L. Mukhopadhyay.
7. Sastri, S. (1911). *History of the Brahmo Samaj*. Sadharan Brahmo Samaj.
8. Sen, A. P. Rammohun Roy: A Critical Biography. Orient BlackSwan.